سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ

सूरह क़द्र मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ فِىۡ لَيۡلَةِ الۡقَدۡرِ ۚ ۖ (1)

निःसंदेह हमने उसे (क़ुरआन को) क़द्र की रात में अवतरित किया (उतारा)।

وَمَاۤ اَدۡرٰٮكَ مَا لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ؕ (2)

और तुम्हें क्या पता, क्या है ? क़द्र की रात !

لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ۙ۬ خَيۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ ؕ (3)

क़द्र की रात हज़ार महीनों से उत्तम है।

تَنَزَّلُ الۡمَلٰٓٮِٕكَةُ وَالرُّوۡحُ فِيۡهَا بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ‌ۚ مِّنۡ كُلِّ اَمۡرٍ ۛۙ (4)

उसमें 'मलाइका' (फ़रिश्ते) और "रूह" (पवित्र आत्मा : जिब्रील) उतरते हैं, अपने रब की अनुमति से हर काम के लिए।

سَلٰمٌ ۛ هِىَ حَتّٰى مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ع (5)

शांति है वह (रात), भोर (उषा) के उदय होने तक।